International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2020; 2(1): 63-64
Received: 04-01-2020
Accepted: 14-03-2020

डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत)
सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत)
सी.एम.के. नेषनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

ताल और छन्द में एकरूपता

डॉ. रंजना ग्रेवर

सार
ताल और छन्द में एकरूपता प्रमाणित करने से पहले इन दोनों की उत्पत्ति और गुणधर्म पर विचार करना। कहा जाता है कि काव्य में जो स्थान छन्द का है, वही संगीत में ताल है। काव्य और संगीत का आपस में अटूट सम्बन्ध है। इन दोनों का माध्यम नाद है। संगीत में नाद सूक्ष्म रूप में और साहित्य में स्थूल रूप में है। पं० शारंगदेव के अनुसार सम्पूर्ण जगत नाद के अधीन है। नाद से वर्ण, वर्ण से पद, पद से वाक्य और वाक्य से भाषा की उत्पत्ति होती है। दूसरे शब्दों में नाद और भाषा के बीच अनेक सीढ़ियाँ हैं। नाद और भाषा का संबंध ध्वनि से है और ध्वनि के साथ काल तत्त्व जुड़ा हुआ है। ध्वनि और काल मिलकर ही नाद की उत्पत्ति करते हैं। बिना काल के ध्वनि का अस्तित्व नहीं और न ही ध्वनि के बिना काल का अस्तित्व है। इस काल को मापने का साधन संगीत में ताल और साहित्य में छंद है अर्थात् ताल और छंद के द्वारा काल को मापा जाता है। स्पष्ट है कि दोनों का उद्देश्य काल को मापना है।

कुटशब्द: छन्द और ताल, जगत नाद, ध्वनि, एकरूपता

प्रस्तावना
कुछ लोग छंद से अभिप्राय लय लेते हैं, परन्तु छन्द का अर्थ लय नहीं है। हाँ, यह बात जरूर है कि बिना लय के छन्द नहीं हो सकता। जब लय को एक विशेष आकार प्रदान कर देते हैं तो साहित्य में उसे 'छंद' कह दिया जाता है। इसी प्रकार इसी लय का एक विशेष आकार जब सांगीतिक ध्वनियों को प्रदान कर दें तो ताल बन जाता है।
छंद और ताल का उद्देश्य तो एक ही है, परन्तु प्रयोग विधि में अन्तर है। छंद वर्ण और मात्रा पर आधारित है और ताल हाथ की क्रियाओं पर अर्थात् मात्राओं पर। माँ का अपने पुत्र के प्रति जब आत्मीयता का भाव उठता है तो ममता कहलाता है। मम का अर्थ मेरा और ता लगने से भाववाचक संज्ञा होती है, अर्थात् मेरापन यानी आत्मीयता। यही भाव जब पुत्र का अपनी माँ के प्रति उठता है तो उसे ममता न कहकर 'श्रद्धा' कहा जाता है। भाव एक ही है– आत्मीयता। संबंध भिन्नता के कारण संज्ञाएं भिन्न–भिन्न हुई। बीज और गुण धर्म एक ही है। इसी तरह छन्द और ताल–भेद भी नाम–भेद के कारण हमें अलग–अलग नजर आते हैं, परन्तु दोनों का गुण धर्म एक ही है– सुनियमित गति देना। यही गुण धर्म संगीत के क्षेत्र में ताल कहलाता है और साहित्य के क्षेत्र में इसकी संज्ञा छंद होती है।
संगीत रत्नाकर में ताल शब्द की व्युत्पत्ति तल धातु में धन् प्रत्यय लगाकर बताई गई है। तल से अभिप्राय तले अथवा बुनियाद से होता है। छंद की व्युत्पत्ति 'चर्दि' धातु से हुई है। जिसका अर्थ 'आहलादकारी'। यासक ने 'चदि संवरणे से इस शब्द की व्युत्पत्ति मानी है जिसका अर्थ है 'आच्छादन'। दोनों व्युत्पत्तियों को देखते स्पष्ट प्रतीत होता है कि छंद का उद्देश्य भाषा और वाणी को सुरक्षित करना स्थायीत्व पदान कर उन्हें रंजक बनाना है।
छंद को वेद के पाद कहा गया है अर्थात् वेद को सहारा देने वाला, गति देने वाला छंद है। 'पाद' से अभिप्राय पद से है और पद शब्द से ही पद्य बना जिसका अर्थ होता है– 'चलने योग्य' अर्थात् पद का गतिमय रूप पद्य होता है। यही छंद का आधार है।
संगीत को व्यवस्थित करने के लिए आधार प्रदान करने के लिए और स्थायित्व प्रदान करने के लिए जिस तरह ताल प्रयुक्त होता है उसी तरह काव्य को स्थायित्व व आधार प्रदान करने के लिए छंद प्रयुक्त होता है। यही कारण है कि हमारे धर्म ग्रन्थ, शास्त्र आदि छन्दोबद्ध है। छन्दोबद्ध रचना स्थायी भाव की तरह मानस पटल पर अंकित हो जाती है। इस तरह यह स्थायित्व और चिरंजीविता को प्राप्त होती है।
छंद भाषा को गति प्रदान करता है। इसी प्रकार ताल का धर्म भी स्वरों को गति प्रदान करना होता है। संगीत में स्वरों को जब ताल का सहारा मिलता है तो वे ही स्वर हृदय को उल्लासित व उत्तेजित करके आनंद प्रदान करते हैं। गति की विभिन्नता द्वारा विभिन्न रसों की उत्पत्ति होती है जिससे विभिन्न चलन शैलियों का विकास होता है।
संगीत में ताल की और काव्य में छंदों की रचना लघु गुरु अक्षरों मा मात्राओं के विन्यास से होती

है। यह ठीक है कि काव्य में लघु मात्रा का माप एक अक्षर काल और गुरु मात्रा का काल दो अक्षर काल है। संगीत में लघु मात्रा का काल चार अक्षर काल है और कुछ पाँच अक्षर काल भी मानते हैं। गुरु आठ मात्रा या 10 मात्राा काल का होता है। संगीत में प्लुत का भी प्रयोग है जो 12 या 15 मात्रा काल का है। काकपद 16 या 20 मात्रा काल का है। द्रुत दो अक्षर काल और अनुद्रुत 1 अक्षर काल। काव्य छंद में तो ह्रस्व दीर्घ का काल स्थिर है परन्तु ताल शास्त्र में ह्रस्व दीर्घ स्थिर नहीं। दक्षिण ताल पद्धति तो लघु की मात्राओं पर आधारित है। लघु के मात्रा परिवर्तन से तालों की विभिन्न जातियां बताई जाती है।

छंद और ताल दोनों में ही 'यति' का विशेष महत्त्व है। छंद शास्त्र में यति से अभिप्राय अल्प विश्रांति से है, जो अक्षर या मात्रा के नियत संख्या समूह पर होती है! संगीत शास्त्र में यति से अभिप्राय लय–प्रयोग के नियम से है। पं० शारंगदेव ने 'यति' को लय के प्रयोग का नियम बताया है।

छंदोमंजरी में जिह्वा के विश्राम स्थल को 'यति' कहा गया है। छंदों में गणों का प्रयोग होता है। गणों का भारतीय तालों में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमारी प्राचीन तालों में भी गणों का प्रयोग हुआ है। तालों में जिस प्रकार सम, अर्द्धसम एवं विषम मात्राओं के खंड होते हैं, उसी प्रकार छन्द शास्त्र में भी सम, अर्द्धसम, विषम मात्राओं के खण्ड होते हैं।

छंद और ताल वास्तव में एक ही वृक्ष की दो शाखाएं हैं। दोनों का उद्देश्य गति को अनुशासित करना, मर्यादा की सीमा रेखाएं खींचना और काल को मापना है। ताल यदि काल की क्रिया का मापदंड है तो छंद की कसौटी भी यही है। इन दोनों का मूल धर्म काल को अनुशासित करना है।

ताल और छंद का आधार नाद (स्वर) है। छंद रचना में भी स्वरों की ही नाप तोल की जाती है, स्वर रहित व्यंजनों की नहीं। ये दोनों क्रियाएं कालमापक हैं, इसलिए इनका गुणधर्म भी एक ही है। जिस तरह संगीत को अमरत्व प्रदान करती है, उसी प्रकार छन्द भी काव्य को अमरत्व देता है। छंदोबद्ध वाणी इतनी रंजक हो जाती है कि कभी–कभी वह लोक वाणी की संज्ञा प्राप्त कर लेती है। संस्कृत के श्लोक, दाह चौपाई आज भी फनंजंजपवदे की तरह लोगों की जुबान पर हैं जैसे

जहां सुमति तहँ सम्पत नाना
जहां कुमति तहँ विपत निदाना ।

यह तुलसीदास के 'रामचरित मानस' की चौपाई है जो लोकोक्ति बन गई।

'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः' यह महाभारत का श्लोकांश है और इसे लोग मुहावरे की तरह प्रयोग करते हैं। इसी तरह अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं जो भाषा ज्ञान से रहित लोगों की जिह्रा पर विराजमान है। अतः स्पष्ट है कि छंद काव्य को अमरत्व प्रदान करता है और ताल संगीत को जिस तरह भिन्न–भिन्न तालों से विभिन्न रसों की उत्पत्ति की जा सकती है, ठीक उसी तरह भिन्न–भिन्न रसों के अनुकूल ही छंदों का चयन किया जाता है अर्थात् रस परिपाक में दोनों ही शक्तियाँ समान रूप से सहायक है जैसे वीर तथा रौद्र रस के लिए पंचचामर जैसा छंद उद्दीपन का काम करता है। 'शिवतांडव सूत्र' में इसीलिए पंचचामर छंद है। गुरुगोबिन्द सिंह कृत 'चंडी की वार' में कवित्त और सवैया जैसे छंदों का चयन किया गया है। इस तरह तालां में भी घमार और चारताल आदि वीररस के उपयुक्त ताले मानी गई हैं। करूण तथा शांत रस के लिए विलम्बित लय को, शृंगार रस के लिए मध्य लय को, अद्भुत. भयानक आदि चंचल भावों के लिए द्रुत लय को उपयुक्त माना गया है। गीतों की भाषा के रसानुकूल यदि ताल का चयन किया जाए तो ताल स्थायी भाव के उद्दीपन का काम करेगी। इन सभी तथ्यों से स्पष्ट होता है कि छंद और ताल, दोनों में रस–परिपाक की शक्ति समान रूप से विद्यमान अंत में मैं इतना ही कहूँगी कि छंद और ताल के स्वरूप, मूलधर्म, उद्देश्य और प्रयुक्त सामग्री सभी में एकरूपता है। अगर थोड़ा सा रूपांतर है तो कार्य क्षेत्र की भिन्नता के कारण।

संदर्भ सूची

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, निबंध संगीत
2. शांति गोवर्धन, शास्त्रीय संगीत और दर्पण
3. पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे, हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति, क्रमिक पुस्तक मलिका, भाग–4
4. डा. कलाश्री खण्डे, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ताल